Name:- Soni Kumari
Class:- B.A (H)
Deptt:- Sanskrit

रूपसिद्धिः

अक्षशौण्डः

लौ० विग्रह:- अक्षेषु शौण्डः
अलौ० वि०:- अक्ष सुप शौण्ड सु

इस विग्रह के पश्चात 'सप्तमी शौण्डैः' से सप्तम्यन्त 'अक्ष' शब्द का 'शौण्ड' शब्द के साथ समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होने के फलस्वरूप 'सुपोधातु-प्रातिपदिकयोः' से सुप (सुप और सु) का लोप होने पर रूप बना ——

अक्ष शौण्ड

इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'अक्ष' की उपसर्जन संज्ञा होने के फलस्वरूप 'उपसर्जनं पूर्वम्' से 'अक्ष' का पूर्व प्रयोग होने पर रूप बना ——

अक्षशौण्ड

इस स्थिति में पुनः 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से प्रातिपदिक संज्ञा हो पुनः 'स्वौजसमौट्' से सु विभक्ति के आगमन के पश्चात रूप बना ——

अक्षशौण्ड सु

इस स्थिति में सु की 'उ' की इत्संज्ञा तथा तस्यलोपः से उसका लोप हो जाता है पुनः ससजुषो रुः से 'स्' का रुत्व होने के बाद 'उ' के लोप के अनन्तर 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' से 'र्' का विसर्ग हो रूप सिद्ध हुआ ——

अक्षशौण्डः